क्रियात्मक शोध – आख्या

कार्यक्रम का नाम – रा०उ०मा०वि० के शिक्षकों की क्रियात्मक शोध कार्यशाला

विभाग का नाम – सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा विभाग

कार्यक्रम समन्वयक –डॉ हरीश चन्द्र शुक्ल

कार्यक्रम सह समन्वयक – श्रीमती प्रियंका कोश्यारी

प्रतिभागियों का विवरण – जनपद के समस्त विकास खण्डों से के रा०उ०मा०वि० शिक्षक एवं शिक्षिकाएं।

प्रतिभागियो ं की सख्या –क्रियात्मक शोध कार्यशाला में कुल 50 जिसमें 31 पुरूष एवं 19 महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।

आयोजन की तिथि – दिनांक 28 नवम्बर 2025 से 30 नवम्बर 2025 तक (03 दिवसीय)।

क्र0 सं0	संदर्भदाता का नाम	पदनाम	संस्थान
1	श्री नरसिंह मौर्य	प्रवक्ता	डायट, सारनाथ वाराणसी

संदर्भदाता का विवरण–

कार्यक्रम की उपलब्धि/संक्षिप्त आख्या – क्रियात्मक शोध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य किसी समस्या का व्यवाहारिक समाधान निकालना और उसे बेहतर बनाना होता है। यह अनुसंधान कार्यक्षेत्र में सुधार के लिए किया जाता है। इसमें शोधकर्ता न केवल समस्या की पहचान करता है। अपितु उसके समाधान के लिए रणनीति भी बनाता है,और परिणाम का मूल्यांकन भी करता है।

क्रियात्मक शोध एक चक्रीय प्रक्रिया होती है, जिसमें समस्या की पहचान, योजना बनाना, क्रियान्वयन और मूल्यांकन शामिल होता है। उदाहरण के लिए शिक्षा के क्षेत्र में कोई शिक्षक यदि अपने छात्रों की सीखने की गति को सुधारना चाहता है तो वह एक नई शिक्षण पद्धति अपनाकर उसके प्रभाव का अध्ययन कर सकता है। यदि नई पद्धति प्रभावी नहीं होती, तो उसमें और सुधार कर उसे दुबारा लागू किया जाता है। इस प्रकार यह अनुसंधान लगातार सुधार की प्रक्रिया को देता है। वार्षिक कार्ययोजना (2025–26) में प्रस्तावित सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 28 नवम्बर 2025 से 30 नवम्बर 2025 तक (03 दिवसीय) रा०उ०मा०वि० के शिक्षको की क्रियात्मक शोध कार्यशाला का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण में मुख्य संदर्भदाता श्री नरसिंह मौर्य द्वारा क्रियात्मक शोध का उददेश्य, उपयोगिता, क्रियात्मक शोध हेतु समस्याओं का चयन एवं कारणों पर चर्चा परिचर्चा किया गया । क्रियात्मक शोध प्रशिक्षण रा०उ०मा०वि० के शिक्षक/ शिक्षिकाओं को अपने विद्यालयो ं में पठन पाठन से संबंधित समस्याओ के तात्कालिक निवारण हेतु अति महत्वपूर्ण है।

ऊधम सिंह नगर